In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

०(क)

संस्कृत साहित्य सौरभ

हिन्दी २२६

# प्रतिज्ञा यौगंधरायण

१९२ ८० (क)

हिन्दी
२६

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

३६

भास-कृत

# प्रतिज्ञा यौगंधरायण

नि 92 80
(क)
हि. 226

श्री रामचंद्र टंडन
द्वारा
कथा-सार

विष्णु प्रभाकर
द्वारा
संपादित

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६१

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय,
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९६१
मूल्य
४० नये पैसे

मुद्रक
हीरा आर्ट प्रेस,
दिल्ली

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
National Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

# संस्कृत-साहित्य-सौरभ

हमारा संस्कृत-साहित्य अत्यंत समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो, जिसके संबंध में मूल्यवान सामग्री का अनंत भंडार संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिंदी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें; परंतु उसका रस वे हिंदी के द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर बहुत समय पहले हमने विचार किया था कि संस्कृत के महाकवियों, नाटककारों आदि की विशिष्ट रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हिंदी में प्रस्तुत करें। फलतः अबतक इस माला में ३६ पुस्तकें निकल चुकी हैं।

इस पुस्तक-माला से हिन्दी के सामान्य पाठक भी लाभ उठा सकें, इसलिए पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया है।

इन पुस्तकों का संपादन हिंदी के सुलेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े परिश्रम से किया है।

आशा है, हिंदी के पाठकों को इन पुस्तकों से संस्कृत-साहित्य की महान रचनाओं की कुछ-न-कुछ झांकी अवश्य मिल जायगी। पूरा रसास्वादन तो मूल ग्रंथ पढ़कर ही हो सकेगा। यदि इन पुस्तकों के अध्ययन से मूल पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा हुई तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

—मंत्री

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय,
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

●

पहली बार : १९६१
मूल्य
४० नये पैसे

●

मुद्रक
हीरा आर्ट प्रेस,
दिल्ली

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

# संस्कृत-साहित्य-सौरभ

हमारा संस्कृत-साहित्य अत्यंत समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो, जिसके संबंध में मूल्यवान सामग्री का अनंत भंडार संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिंदी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें; परंतु उसका रस वे हिंदी के द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर बहुत समय पहले हमने विचार किया था कि संस्कृत के महाकवियों, नाटककारों आदि की विशिष्ट रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हिंदी में प्रस्तुत करें। फलतः अबतक इस माला में ३६ पुस्तकें निकल चुकी हैं।

इस पुस्तक-माला से हिन्दी के सामान्य पाठक भी लाभ उठा सकें, इसलिए पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया है।

इन पुस्तकों का संपादन हिंदी के सुलेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े परिश्रम से किया है।

आशा है, हिंदी के पाठकों को इन पुस्तकों से संस्कृत-साहित्य की महान रचनाओं की कुछ-न-कुछ झांकी अवश्य मिल जायगी। पूरा रसास्वादन तो मूल ग्रंथ पढ़कर ही हो सकेगा। यदि इन पुस्तकों के अध्ययन से मूल पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा हुई तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

—मंत्री

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

# भूमिका

'प्रतिज्ञा यौगन्धरायण' महाकवि भास की एक सुन्दर रचना है। संस्कृत-साहित्य में भास एक स्तम्भ के समान हैं। कालिदास, बाणभट्ट और राजशेखर आदि कवियों ने उनकी बड़ी प्रशंसा की है। अभिनव-गुप्त, वामन, भामह आदि आचार्यों ने भी उनके रूपकों का उल्लेख किया है। लेकिन जैसा कि अनेक संस्कृत-कवियों के बारे में सत्य है, इनके जीवन-वृत्त के सम्बन्ध में निश्चय से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। अधिकांश विद्वान मानते हैं कि यह तीसरी सदी में हुए। लेकिन इनके नाटकों का पता अभी सन् १९०९ और १२ में ही लगा है।

इनके लिखे तेरह रूपकों का पता चला है। बहुत-से विद्वानों को इस बारे में शक है कि ये सब भास के लिखे हुए हैं। हां, जहांतक 'प्रतिज्ञा यौगन्धरायण' का सम्बन्ध है, वह भास-कृत स्वीकार कर लिया गया है। कला की दृष्टि से यह नाटक बहुत परिपक्व और सफल है। इसमें वत्स-राज उदयन और उज्जैन के प्रसिद्ध राजा चण्डमहासेन प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता के विवाह की कथा आती है। इसमें बताया गया है कि किस प्रकार चण्डमहासेन ने छल द्वारा उदयन को इसलिए बन्दी बनवाकर राजधानी में बुलाया था कि वह अपनी पुत्री का विवाह उससे कर सकें। वह अपनेको बहुत बड़ा मानते थे। इसलिए उन्होंने उदयन से प्रार्थना नहीं की, लेकिन ऐसे साधन जुटा दिये, जिससे उदयन वासवदत्ता को भगा कर ले जा सके। इसी षड्यन्त्र की यह कहानी बहुत रोचक है।

नाटकीय तन्त्र की दृष्टि से भी नाटक सफल बन पड़ा है। छोटे-छोटे वाक्य लिखने के लिए भास प्रसिद्ध हैं, परन्तु भाव इनमें भरे रहते हैं। भाषा सरल, स्वाभाविक और मधुर है। मानव-हृदय के यह सच्चे पारखी हैं। प्रकृति का चित्रण इनका अनुपम होता है। इसीलिए जयदेव ने इन्हें 'कविता-कामिनी का हास' माना है।

—सम्पादक

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

# प्रतिज्ञा यौगन्धरायण

: १ :

वत्सराज उदयन अपने समय का बड़ा गौरवशाली राजा था। राजर्षि भरत के वंश में उसका जन्म हुआ था। शरीर से युवा, स्वस्थ और कांतिमान था। आखेट का प्रेमी था। गानविद्या का जाननेवाला था। सप्ततंत्री वीणा का ऐसा अद्‌भुत बजानेवाला दूसरा न था। उसकी घोषवती वीणा को सुनकर मत्त हाथी भी वश में हो जाते थे। कौशांबी उसकी राजधानी थी। पुरजन उससे स्नेह करते थे। कुशल मंत्रीगण राजकाज में उसकी सहायता करते थे। मंत्रियों में श्रेष्ठ यौगंधरायण अपनी सूझबूझ और राज-सेवा के लिए प्रसिद्ध था।

उदयन का पराक्रम उसके अनेक समकालीन राजागण मानते थे। मगध, काशी, अंग, सौराष्ट्र, मिथिला, शूरसेन, सभी प्रदेशों के राजे उससे अच्छे संबंध बनाये रखना चाहते थे। उदयन का आगे बढ़ना किसीको खटकता था तो वह था अवंति का राजा महासेन चंड-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



प्रद्योत। अवंति और वत्स पड़ोसी राज्य थे। महासेन प्रद्योत भी प्रतापी राजा था। बहुत-से राजे उसके यहां आकर सिर झुकाते थे। उसकी लालसा थी कि उदयन भी ऐसा करे। लेकिन उदयन को अपने कुल और शक्ति का अभिमान था। महासेन प्रद्योत और उसके मंत्री भरतरोहक ने उदयन को नीचा दिखाने का बहुत प्रयत्न किया, लेकिन वे सफल न हुए। अन्त में भरतरोहक ने एक जाल रचा।

उदयन ने आखेट की तैयारी की थी। सदल-बल वह शिकार के लिए निकले। साथ में मंत्री रुमण्वान भी थे। अनेक सैनिक भी थे। वेणुवन और फिर तीन वनों को पारकर नागवन उन्हें पहुंचना था। इधर कौशांबी में, मंत्री यौगंधरायण को, अपने गुप्तचरों से एक सूचना मिली। पता लगा कि जंगली हाथियों के बीच, सैनिकों के शरीर को ढंककर, एक बनावटी नीले हाथी की रचना कर, प्रद्योत के लोग उदयन को छलना चाहते हैं। यौगंधरायण ने इस् कपट को विफल करने के लिए और अपने स्वामी को सतर्क करने के लिए तुरंत एक दूत भेजने का प्रबंध किया। लेकिन इससे पहले कि दूत चले, यौगंधरायण को यह सूचना भी मिली कि जो कपट होना था, वह हो चुका है।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



सूचना देनेवाला था हंसक, महाराज उदयन का चरणसेवक। हंसक अपने स्वामी की सेवा में छाया के समान रहनेवाला अनुचर था। जब यौगंधरायण ने सुना कि वह अकेला लौटकर कौशांबी पहुंचा है तो उनकी चिंता की सीमा न रही। तुरंत उन्होंने हंसक को पास बुलाया और उसे देखते ही प्रश्न किया :

"हंसक, स्वामी क्या नागवन नहीं गये ?"

"आर्य, स्वामी तो कल ही चले गये।" हंसक ने बताया।

"ओह ! हम लोग ठगे गये। क्या अब भी कुछ आशा है, या आज ही प्राणों को छोड़ना पड़ेगा ?"

"स्वामी कुशलपूर्वक हैं।"

"कुशल से हैं—यह कहकर तुमने बता दिया कि विपत्ति साधारण है। मुझे लगता है कि स्वामी अवश्य पकड़ लिये गए हैं।"

"आर्य ने ठीक जान लिया, स्वामी पकड़ लिये गए हैं।"

फिर हंसक ने यौगंधरायण को विस्तार से उदयन के बंदी होने का हाल कह-सुनाया। किस प्रकार वेणुवन पहुंचने पर, सैनिकों को वहां ठहराकर, थोड़े से लोगों के साथ उदयन नागवन गये। किस प्रकार

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



मदगंधीर पर्वत से एक कोस पहले ही, तालाब के कीचड़ से आधी ऊपर निकली हुई शिला की तरह हाथियों का एक समूह दिखाई पड़ा। किस तरह हाथियों के झुण्ड से निकलकर एक पैदल सिपाही भागा हुआ उदयन के पास आया और उसने बताया कि मल्लिका और साल वृक्षों से ढंके शरीरवाले नख और दंत-विहीन एक नीले हाथी को उसने देखा है। किस प्रकार उसे सौ स्वर्ण-मुद्राएं देते हुए उदयन ने कहा कि निश्चय ही यह विशाल हाथी वही है जिसका वर्णन हस्तिशिक्षा में नील-कुवलय शरीर नाम से आया है। किस तरह उदयन ने उसे केवल वीणा की सहायता से वश में करने की बात कही। हंसक ने यह सब यौगंधरायण को बताया।

हंसक ने यह भी बताया कि स्वामी ने मंत्री रुमण्वान को अपने जीवन की शपथ दिलाकर लौटा दिया और आप सुंदर पाटल घोड़े पर सवार होकर केवल बीस पैदल सिपाहियों सहित बढ़ गये।

"फिर क्या हुआ, हंसक ?" यौगंधरायण ने पूछा।

"आर्य, घने साल वृक्षों की नीलिमा में विशाल-काय हाथी की नीलिमा जैसे समा गई हो। दो चमकते हुए दांतों से पहचाना जानेवाला वह बनावटी गज

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



केवल सौ धनुष की दूरी पर दिखाई पड़ा। तब तो स्वामी ने घोड़े से उतरकर देवताओं को प्रणाम किया और हाथ में वीणा ले ली।"

"अरे, तब क्या हुआ ?"

"एक मत्त गज का चीत्कार-सा सहसा सुनाई दिया। और फिर उस बनावटी हाथी का भेद खुल गया। हथियारों से सजे सैकड़ों शत्रु सैनिक, महामात्य-सहित उस विशालकाय हाथी लगनेवाले आवरण से निकल पड़े। शत्रु की कूटनीति की चाल जान ली गई।"

"हां, इसके बाद ?"

"स्वामी ने अद्‌भुत पराक्रम दिखाया। संकेत पर चलनेवाले सुंदर पाटल पर सवार, मुट्ठी-भर साथियों सहित स्वामी शत्रु के बड़े दल पर टूट पड़े और उसका संहार करने लगे। लेकिन शत्रु-दल की अधिकता के कारण वह थक गये। साथ के परिजन काम आये। मैं अकेला बच रहा—स्वामी के कारण ही मेरी रक्षा हुई और स्वामी आप क्षत-विक्षत होकर, घोड़े से धरती पर गिरकर मूर्छित हो गये। तब शत्रुओं ने जंगली लताओं के पाश में बांधकर उन्हें बंदी बना लिया।"

"हा, अनर्थ हो गया !"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



"एक दुष्ट ने तो अचेत पड़े हुए स्वामी की हत्या का पाप भी उठाने की इच्छा से अपनी तलवार खींची, परन्तु सौभाग्य से प्रद्योत का एक अमात्य शालंकायन वहां पहुंच गया और उसने उस दुष्ट को ऐसा दुस्साहस करने से रोका। उस महानुभाव ने स्वामी का उपचार कर मीठे वचन कहे, और घावों के कारण अन्य सवारी पर चल सकने में असमर्थ जानकर स्वामी को पालकी पर बिठाकर महासेन प्रद्योत की राजधानी उज्जयिनी ले चला।"

"और हंसक, तुम स्वामी के साथ क्यों न गये ?"

"आर्य, मुझे शालंकायन ने आज्ञा दी कि मैं यह समाचार आकर कौशांबी में पहुंचाऊं।"

"तो मेरे लिए स्वामी ने विशेष रूप से कुछ नहीं कहा ?"

"कहा है आर्य ! जब मैं स्वामी की प्रदक्षिणा कर चल रहा था, तब बहुत-कुछ कहने की इच्छा रखते हुए भीतर से उमड़ती हुई मेरी आंखों में देखते हुए कहा, 'जाओ यौगंधरायण से मिलो।'"

"सारे सचिव-मंडल को छोड़कर स्वामी ने अकेले मेरा नाम लिया ?"

"ऐसा ही है।"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



"मुझ अयोग्य पर स्वामी की विशेष कृपा है, ऐसा मानता हूं। परन्तु आज तक मैंने किसी विपत्ति का प्रतिकार नहीं किया। स्वामी के अन्न और राजसम्मान का बदला नहीं दिया—ये विचार मेरे मन को बेध रहे हैं।"

फिर ध्यान में डूबे हुए-से यौगंधरायण ने कहा, "तो स्वामी भी मुझे एक दूसरा ही पुरुष पायेंगे। उस शत्रु राजा प्रद्योत के नगर में, उसके कारागार में, अथवा वनप्रांत में या परलोक में भी, स्वयं बंधन में पड़कर मैं स्वामी से मिलूंगा। उस राजा को, जिसे अपने विजयी होने का अभिमान हो गया है, ठगकर जब मैं स्वामी को राज्य-सिंहासन पर फिर आसीन करूंगा, तब उनके समीप प्रशंसा का अधिकारी बनूंगा।"

इस बीच उदयन के बंदी होने का समाचार राजप्रासाद में सब जगह फैल चुका था और एक कुहराम मच गया था। लेकिन राजमाता ने जो संदेश मंत्री यौगंधरायण के पास भेजा, उससे उनके धैर्य और बुद्धि-मत्ता का पता लगता है। उन्होंने कहा, "संकट के समय जो विषाद नहीं करता, दुःख पड़ने पर जो हताश नहीं होता, मारे जाने पर भी जो प्राण नहीं छोड़ता, वही

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.



सच्चा बुद्धिमान है । यौगंधरायण मेरे बेटे का मित्र पहले है, मंत्री बाद में। वही बेटा मेरे बेटे को छुड़ाकर लाये।"

यौगंधरायण ने राजमाता के प्यार से पगे वचन पाकर एक बार फिर प्रतिज्ञा की, "यदि राहु से ग्रस्त चंद्रमा की भांति, शत्रु-सेना से ग्रस्त स्वामी को मैं छुड़ा कर न लाऊं, तो मेरा नाम यौगंधरायण नहीं।"

प्रतिज्ञावचन यौगंधरायण ने कहे ही थे कि उन्हें सूचना मिली कि स्वामी की शांति के लिए आयोजित ब्राह्मण-भोज में पागल के वेश में आये हुए किसी अतिथि ने अट्टहास के साथ कहा, "जी भरके खाइये और मौज उड़ाइये ! इस राजकुल का अभ्युदय होनेवाला है।" यह कहने के साथ ही वह अपना वेश छोड़कर अदृश्य हो गया। एक ब्राह्मण ने वे वस्त्र लाकर यौगंधरायण को दिये और बताया कि छद्मवेश में भगवान व्यास पधारे थे।

यौगंधरायण ने इस घटना को स्वयं छद्मवेश धारण करने का संकेत समझा। उसने छोड़े हुए वस्त्र धारण कर लिये। कहा, "यह तो मेरा रूप ही कैसा बदल गया ! अब मुझे स्वामी के पास पहुंचा जानो।"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



: २ :

उधर अवंति की राजधानी उज्जयिनी में इस समय दूसरा ही दृश्य चल रहा था। महासेन प्रद्योत की परम सुन्दरी कन्या वासवदत्ता विवाह के योग्य अवस्था की हो चुकी थी। महासेन और उनकी रानी दोनों को ही यह चिंता थी कि वासवदत्ता सुयोग्य वर प्राप्त करे।

कन्या-दान लेने के लिए उत्सुक और विवाह का प्रस्ताव करनेवाले राजाओं की कमी नहीं थी। इस समय भी ऐसा ही प्रस्ताव लेकर काशिराज के उपाध्याय जैवंति उज्जयिनी में राज-अतिथि के रूप में ठहरे हुए थे।

राजप्रासाद में बराबर यही चर्चा होती रहती थी कि प्रतिदिन अनुकूल गोत्रों के राज-वंशों से कन्यादान के लिए दूतों का आना जाना लगा रहता है, लेकिन महासेन हैं कि न किसीको अंगीकार करते हैं, न उत्तर देते हैं। इससे प्रकट है कि अभी तक उस वर की ओर से कोई दूत नहीं आया, जिसके लिए इस वधू का विधान किया गया है। इसीलिए सभी नरेशों के गुणों को जानते हुए भी महासेन न जानते हुए-से हैं और उसीकी राह देख रहे हैं।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



आर्य जैवंति के प्रस्ताव पर महारानी अंगारवती से परामर्श करने के लिए महासेन उनकी प्रतीक्षा में थे। साथ ही यह सोच रहे थे कि, 'मेरे घोड़ों के खुरों से उठी हुई धूल सभी राजे अपने मुकुटों पर धारण करते हैं, परन्तु इससे मेरा क्या संतोष ? हस्तिविज्ञान-कुशल परम गुणवान वत्सराज तो मेरे सामने अभी प्रणाम करने नहीं आया है।"

रानी अंगारवती के आते ही महासेन ने पूछा, "वासवदत्ता कहां है ?"

"वह उत्तरा वैतालिकी के पास नारदीय वीणा सीखने गई है। उसे वीणा सिखाने के लिए एक आचार्य बुला दीजिये न !" रानी ने कहा।

"अब उसके विवाह का अवसर आ गया है तो आचार्य आकर क्या करेंगे ! अब पति ही उसे शिक्षा देगा।"

"हूं, क्या अभी से मेरी पुत्री विवाह-योग्य हो गई ?"

"अरे, तुम्हीं तो नित्य अनुरोध करती हो कि उसे पति को दीजिये।"

"विवाह कर देने की इच्छा तो है ही, लेकिन मुझे उसका भावी वियोग संताप दे रहा है। अच्छा, तो उसे

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



किसे देना निश्चय किया है ?"

महासेन और रानी के बीच इस तरह का वार्तालाप चल ही रहा था कि कंचुकी ने क्षमा मांगते हुए प्रवेश किया और शुभ समाचार देने की उत्सुकता प्रकट की। 'महासेन की जय हो', कहकर रानी उठने ही को थी, लेकिन महासेन ने कहा, "देवी, बैठो ! प्रिय वचन सुनने की अधिकारिणी तुम भी हो।"

कंचुकी ने निवेदन किया, "अमात्य शालंकायन ने वत्सराज को बंदी बना लिया है।"

अविश्वास के स्वर में महासेन ने पूछा, "उदयन को ?"

"और क्या ?"

"अरे, शतानीक के पुत्र को ?"

"हां, महाराज, उन्हींको।"

"सहस्रानीक के पौत्र को ?"

"हां, उन्हींको।"

"कौशांबी के स्वामी को ?"

"हां, उन्हींको।"

"गांधर्व विद्या जाननेवाले को ?"

"लोग उसे ऐसा ही कहते हैं।"

"वत्सराज ही है न ?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



"और क्या, महासेन, वही हैं।"

"अच्छा तो क्या यौगंधरायण मर गया ?"

"नहीं, वह कौशांबी में है।"

"नहीं, ऐसा है तो वत्सराज बंदी नहीं हुआ है।"

"महासेन क्षमा करें ! मैं वृद्ध हूं, साथ ही ब्राह्मण भी ; आजतक मैंने महासेन के आगे कभी झूठ वाक्य नहीं कहा है।"

फिर महासेन को पता लगा कि एक खच्चर जुते हुए वेगवान रथ पर वत्सराज को आगे बिठाकर शालंकायन स्वयं आ गये हैं। "आज से मेरी अक्षौहिणी सेना सुख से विश्राम करे !"—यह कहकर उन्होंने संतोष प्रकट किया।

देवी अंगारवती ने पूछा, "तो क्या वास्तव में मंत्री उसे ले आये हैं ? फिर तो अपनी वासवदत्ता को किसी दूसरे को देने की इच्छा नहीं है।"

महासेन ने स्मरण दिलाया, "यह तो युद्ध में हारा हुआ मेरा शत्रु है !" फिर भी उन्होंने आज्ञा दी कि राजकुमार के योग्य सत्कार के साथ वत्सराज को आगे करके अमात्य उनके पास आयें।

अवंतिराज महासेन प्रद्योत इस अवसर पर अपने जीवन का सबसे बड़ा सुख अनुभव कर रहे थे। जहां

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



उन्होंने उदयन को राजोचित आदर दिये जाने की आज्ञा दी, वहां उन्होंने कंचुकी को यह आदेश दिया कि वत्सराज के दर्शनों के लिए आये हुए लोगों में से किसीको हटाया न जाय।

रानी अंगारवती के मन में और ही आकांक्षाएं जग रही थीं। वह वासवदत्ता के वर की समस्या को दूर हुआ समझ रही थीं। उन्होंने महासेन से पूछा, "अनेक राजकुलों के लोग मेरे यहां सम्बन्ध करने के लिए आये सुने गए, लेकिन इसने अभी तक कोई पुरुष नहीं भेजा है ?"

"देवि," महासेन ने उत्तर दिया, "मेरी महासेन की पदवी को ही वह नहीं गिनता; सम्बन्ध जोड़ने की बात कैसे चलाता !"

इतने में "महासेन की जय हो !" कहते हुए शालंकायन ने प्रवेश किया। "भरत-कुल में चली आई वत्सराज की यह घोषवती वीणा देखने योग्य है।" यह कहकर उसने उदयन से छीनी गई वीणा महासेन को भेंट कर दी। मंत्र-विद्या की तरह बड़े-बड़े गजों को वश में करनेवाली यह प्रसिद्ध वीणा थी। यह युद्ध में विजित रत्न था, जिसे महासेन ने स्नेहवश वासवदत्ता को दिये जाने का आदेश दिया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



महासेन ने यह भी कहा, "बड़े शोक की बात है कि उसे अनेक घाव लगे हैं। यह कष्ट उसे व्यर्थ के तेज-प्रदर्शन के कारण पहुंचा है। इसकी सब देखभाल सत्कारपूर्वक होनी चाहिए। बीती हुई युद्ध-सम्बन्धी कोई चर्चा उसके सामने न हो। समय की सूचना उचित स्तुति-वचन से दी जाय, कंचुकी। पहले तो इसके अभिमान को देखते हुए मेरे मन में वैर की भावना थी पर अब बंदी हुआ देखकर मेरा रोष जाता रहा। अब यह चिन्ता हो रही है कि यह शीघ्र अच्छा हो जाय।"

: ३ :

उदयन को बंदीगृह से मुक्त करने की प्रतिज्ञा करके यौगंधरायण चुप नहीं बैठ सकता था। अपने स्वामी की मुक्ति के उपाय करने में वह लग गया। आप तो पागल के छद्मवेश में वह उज्जयिनी पहुंचा ही, भ्रमणक के वेश में अमात्य रुमण्वान को और स्वामी के अंतरंग साथी वसंतक और सैकड़ों स्वामिभक्त तथा चतुर कौशांबी-निवासियों को अपने साथ ले आया, जो सारे नगर में फैलकर अपने-अपने कर्तव्यों को संभालने लगे। कदाचित् यही कारण था कि मंत्री भरतरोहक ने परिस्थिति की कुछ गंध पा ली और उदयन को बंदी रखने के संबंध में नियम कड़े कर दिये गए।

enal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



यौगंधरायण, रुमण्वान और वसंतक अपने छद्मवेशों में गुप्त स्थानों अथवा निर्जन स्थलों पर मिला करते थे, परामर्श किया करते थे और यदि महासेन के आदमियों या उज्जयिनी के नागरिकों को पास आते देखते थे तो तितर-बितर हो जाते थे। धीरे-धीरे यह षड़यंत्र आगे बढ़ता रहा।

योजना यह थी कि जिस हाथी, नलागिरि, के छल से वत्सराज पकड़े गए, उसीके बहाने उन्हें मुक्त कराया जाय। नलागिरि को यदि व्यामोहित और क्रुद्ध कर दिया जाय और वह अपने रक्षकों के वश में न रहे तो प्रद्योत निराश होकर हाथी को अपनी वीणा द्वारा वश में करने के लिए उदयन से अनुरोध करेगा और फिर उदयन नलागिरी पर आसन जमाकर बैठ जायंगे और गज को इतने वेग से चलायेंगे कि शत्रु-दल उसका पीछा करने की कल्पना ही करता रहेगा और वह विंध्यगिरि को पारकर, वन को लांघते हुए, अपनी राजधानी में पहुंच जायंगे।

यौगंधरायण वसंतक द्वारा स्वामी की टोह रखता था। उसे मालूम हुआ कि वसंतक ने स्वामी से बातचीत की है, उन्हें अपने सामने चतुर्दशी का स्नान भी कराया है। हां, पूजा स्वामी ने केवल प्रणाम करके

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



की है। यौगंधरायण ने सोचा—जिन महाराज के स्नान के अनंतर नगाड़े बजाये जाते थे, काल की गति से आज उन्हींके तिथि-पूजन के अवसर पर केवल प्रणाम रूप से की गई पूजा में बेड़ियों को झनकार सुनाई देती है।

यौगंधरायण ने कहा, "वसंतक, जाओ फिर स्वामी से मिलो और स्वामी से कहना कि वह जो यहां से चलने की बात थी, उसका समय कल है। क्योंकि नलागिरि के रहने, नहाने, खाने, सोने के सभी स्थानों पर समुचित औषधियां फैला दी गई हैं। इस तरह वह मंत्र और औषधियों के प्रभाव के कारण अपने नियमित कर्मों में व्यामोहित कर दिया गया है। अनुकूल वायु द्वारा छोड़ने योग्य धूप की भी व्यवस्था कर ली गई है। उसका क्रोध जगाने के लिए प्रतिद्वंद्वी गज का मद भी प्रस्तुत कर लिया गया है। और गज अग्नि की ज्वाला से डर जाते हैं, इसलिए गजशाला के पास ही साधारण स्थिति का जो एक घर है, उसे जला देने का प्रबन्ध कर दिया गया है। गजपति के चित्त को एकदम व्याकुल करने के लिए देवमंदिरों में शंख और दुंदुभियों को रखवा दिया गया है। इन सभी साधनों से होनेवाले उस महारव के बीच प्रद्योत निराश हो स्वामी की शरण में सहायता के लिए आयेगा। तभी घोषवती वीणा को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



प्राप्त करके बंधन से मुक्त हो जाने का अवसर होगा।"

वसंतक सोच में पड़ गया। रुमण्वान ने पूछा, "अब सोच क्या रहे हो ?"

"यही कि कहीं आप लोगों का इतना बड़ा प्रयत्न विफल न हो जाय।"

"हमने तुम्हारी बात ठीक समझी नहीं।" रुमण्वान बोला।

"यह कार्य कैसे बिगड़ सकता है ?" यौगंधरायण ने जानना चाहा।

"वत्सराज के अपने ही दूसरे कार्यों से। अच्छा सुनिये आप दोनों", यह कहते हुए वसंतक ने भेद खोला। "पिछली कालाष्टमी को राजपुत्री वासवदत्ता भगवती यक्षिणी के स्थान पर गई थी। अविवाहिता होने के कारण खुली पालकी में थी। केवल धाय साथ में थी। कंचुकी आदि को उसने साथ में नहीं लिया था। जल की नाली के फूट जाने से वह राजमार्ग से न जाकर बंदीगृह के द्वार के सामने से होकर गई। उस दिन स्वामी कारागर की रक्षा करनेवाले सिपाही को अनुकूल कर बंदीगृह के द्वार पर निकल आये थे।"

"तब क्या हुआ ?" यौगंधरायण और रुमण्वान दोनों ने एक साथ पूछा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.



"कंधा बदलने के लिए आदमियों ने पालकी वहां रोक रखी थी और स्वामी ने राजपुत्री को अच्छी तरह देखा।"

"फिर ?" यौगंधरायण ने पूछा।

"फिर क्या ? तबसे बंदी-गृह को ही प्रमदवन मान कर स्वामी वहीं पर प्रेमलीला में लगे हैं।"

यौगंधरायण ने रुमण्वान से कहा, "फिर तो मित्र, मालूम होता है, बुढ़ापे तक इसी वेश में कटेगी।"

वसंतक ने बात काटते हुए कहा, "और भी तो सुनिये। स्वामी ने यह भी कहा है कि यौगंधरायण से कहना कि उनका निश्चित किया हुआ उपाय मुझे अच्छा नहीं लगता। बच निकलने की बात तो ठीक है, पर हमें प्रद्योत का अपमान करने की चिंता होनी चाहिए। मैं कामवश ऐसा नहीं कह रहा, इसके द्वारा अपने अपमान का प्रतिशोध करना चाहूंगा।"

"कैसा उपहास है !" यौगंधरायण ने कहा, "यह तो अपने मित्रों को कष्ट देने का ढंग है। बिना देश-काल का विचार किये हुए स्वामी को रंगीलापन सूझा है। फिर भी दुःख और मदन से संतप्त ऐसे स्वामी को कैसे छोड़ें !"

"तब तो बंदी-गृह से स्वामी और अंतःपुर से राज-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



कन्या दोनों को निकालिये ।" वसंतक ने उकसाया ।

"यह तो आपके देखने की बात है ।" रुमण्वान ने कहा ।

"हम दोनों के !" आर्य यौगंधरायण बोले, "अच्छा तो यह मेरी दूसरी प्रतिज्ञा है । घोषवती वीणा-सहित स्वामी को मुक्त कराते हुए उस विशाल लोचनों-वाली वासवदत्ता को न हरूं तो मैं यौगंधरायण नहीं ।"

वह अपने साथियों से यह कहकर, अग्नि-गृह की ओर किसी यात्री को आता देख अलग हुए । रुमण्वान और वसंतक के अलग-अलग द्वारों से निकल जाने पर यौगंधरायण अपने पागल के वेश में आकर ऊंचे स्वर में प्रलाप करने लगा—हि··· हि··· हि··· राहु चन्द्रमा को निगलता है, छोड़ो छोड़ो चन्द्रमा को । ··· नहीं छोड़ता, तेरा मुख फाड़कर छुड़ा लूंगा । ···यह देखो, दुष्ट घोड़ा पिछाड़ी तुड़ाकर आ रहा है—ये राज-कन्याएं हैं—हाय मुझे न मारो, न मारो, न मारो ···"

: ४ :

उज्जयिनी में इस समय जो नाटक चल रहा था, वह और भी गहरा रंग पकड़ता है । क्रमशः वत्सराज उदयन बंदी होते हुए भी, वीणा-वादन की शिक्षा देने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.



के लिए, महासेन की पुत्री वासवदत्ता को शिष्या के रूप में ग्रहण करते हैं। दोनों के बीच परस्पर आकर्षण बढ़ता है। जब यौगंधरायण की पूर्व-योजना के अनुसार नलागिरि गज प्रमत्त होता है, तो उसे वश में करने के लिए उदयन से अनुरोध किया जाता है और वह उसे वश में करते हैं। उदयन फिर बंदी नहीं किये जाते। यौगंधरायण अपनी दो प्रतिज्ञाओं के पालन के विषय में बेसुध नहीं है, बल्कि उसकी योजना यह होती है कि उदयन के प्रेम के प्रति अनुकूल वासवदत्ता को, उसीकी क्रीड़ा-हस्तिनी, भद्रवती, पर बिठाकर महाराज उदयन एक नियत अवसर पर कौशांबी के लिए प्रस्थान करें। कौशांबी से लाये गए विश्वासी अनुचर उज्जयिनी में गुप्तचर के रूप में जम जाते हैं और अपने क्रिया-कलाप में तत्पर होते हैं।

यौगंधरायण का एक अनुचर भद्रवती हस्तिनी का परिचारक बन गया था। एक दिन प्रातःकाल जब वासवदत्ता के जल-क्रीड़ा का समय हुआ, भद्रवती के परिचारक का पता नहीं था। वासवदत्ता का भट गात्र-सेवक को नाम ले-लेकर पुकारता रहा। भट को मालूम हुआ कि गात्र-सेवक कंडिल सूंडी के यहां मदिरा पी रहा है। फिर भट ने गात्र-सेवक को पीकर हँसता-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



झूमता, जवा के फूल जैसी लाल आंखें किये हुए अपनी ओर आता देखा।

गात्र-सेवक ने भट को देखकर कहा, "धन्य हैं वे लोग, जो सुरा पीकर मस्त होते हैं, जो सुरा में डूबे हुए हैं।"

भट ने कहा, "क्या बक-बक करता है! जल्दी भद्रवती को ले आ।"

"आजा, आजा भद्रवती!" गात्र-सेवक ने पुकारा, "अरे क्या करूं, मैंने तो भद्रवती का अंकुश ही गिरवी रख दिया।"

"स्वभाव से सीधी भद्रवती को अंकुश क्यों चाहिए? जा, जल्दी भद्रवती को ले आ।"

"आजा, आजा भद्रवती! मैंने तो भद्रवती की अर्द्धचंद्रमाला गिरवी रख दी।"

"भद्रवती तो फूलों से बांधी जा सकती है। जा, भद्रवती को ले आ।"

"आजा, आजा भद्रवती! अरे मैंने तो भद्रवती का घंटा भी गिरवी रख दिया।"

"जलक्रीड़ा के समय भद्रवती को घंटे से क्या प्रयोजन? भद्रवती को ला।"

"आजा, आजा, भद्रवती! अरे बुरा हुआ। भद्र,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.



भद्र···"

"भद्र-भद्र क्या कहता है ?"

"अरे, मैंने तो भद्रवती को भी गिरवी रख दिया।"

भट और गात्र-सेवक की यह बातचीत चल ही रही थी कि सामने शब्द हुआ। गात्र-सेवक ने कहा, "कंडिल सूंडी का घर तोड़कर भद्रवती भाग रही है। लेकिन भट आकाश की ओर देखते हुए बोला, "क्या कहते हो ? यह तो वत्सराज कुमारी वासवदत्ता को लेकर भागे जा रहे हैं।"

"स्वामी का मार्ग निर्विघ्न समाप्त हो !" गात्र-सेवक ने हर्षध्वनि की।

"और पी, देखा अपनी मत्तता का फल ?"

"अरे कौन मत्त था ? कैसा मद ! हम लोग तो स्थान-स्थान पर नियुक्त आर्य यौगंधरायण के गुप्तचर हैं।"

नगर में हलचल मच गई। गजारोही, अश्वारोही सैनिक दौड़-भाग में लगे और उन्मत्त का वेष त्याग कर, विमल करवाल धारण किये हुए, बाएं हाथ में स्वर्ण-रचित ढाल लिये हुए, सिर पर सुन्दर वस्त्र की पगड़ी पहने यौगंधरायण दिखाई पड़े। किसी भट ने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



कहा, "यह सब क्या ? अरे चहारदीवारी और तोरण-द्वार को छोड़कर यह तो सारी कौशांबी ही यहां आई जान पड़ती है।"

यौगंधरायण को अक्षौहिणी सेना ने घेर लिया। कोलाहल बढ़ता गया। दो दलों के आपस में वार चलते रहे। एक दूसरे भट ने स्वर ऊंचा करके घोषणा की, "राजकन्या वासवदत्ता के हरण के समाचार से क्षुब्ध होने के कारण, अतिशय चिल्लाने पर भी मेरा वचन कोई नहीं सुनता। किसलिए अब यह दौड़-धूप हो रही है। आर्य यौगंधरायण पकड़े गए। आर्य यौगंधरायण पकड़े गए। आर्य यौगंधरायण ने दूसरी अक्षौहिणी के आक्रमण को भी तलवार की सहायता से क्षणभर में रोक दिया। लेकिन विजयसुंदर गज के दांत पर आघात करते हुए उनकी तलवार टूट गई। इसलिए तलवार के टूटने से पकड़े गए, पौरुष की कमी से नहीं।"

क्षत-विक्षत यौगंधरायण का मन अपने साध्य की सफलता से संतुष्ट था। जब उनसे कहा गया कि महासेन के मंत्री भरतरोहक उनसे मिलना चाहते हैं तो उन्होंने निर्भीकता से इस प्रस्ताव का स्वागत किया। भरतरोहक को अवश्य अपने पूर्व-छल के कारण मानसिक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.



क्लेश था। यौगंधरायण शस्त्रागार में ठहराये गए। एक भट ने कहा, "अमात्य की आज्ञा है कि बेड़ियां हटा दी जायं।" "हां, मुझे हल्का कर दो। जान पड़ता है भरतरोहक मुझे देखना चाहता है।" यौगंधरायण ने कहा।

भरतरोहक ने आते ही कहा, "अहो, यौगंधरायण इस नाम-मात्र को सुन रक्खा था। सौभाग्य से आज आंखों देख रहा हूं।"

"सौभाग्य से आपको भी मैं देख रहा हूं। आप मुझे देखें। इस प्रकार रुधिर से अवलिप्त शरीरवाले तथा वैर-भावना से अभिभूत बंदी बने बैठे हुए मुझको, गुरुहंता को मारकर शांत बैठे हुए अश्वत्थामा की भांति, देखें।"

"छल से बने हुए गज के संबंध में आपका संकेत है?"

"प्रवंचना का मार्ग तो मेरे लिए आपने ही प्रस्तुत कर दिया है?"

"आर्य यौगंधरायण, अग्नि को साक्षी करके जो महासेन की पुत्री को शिष्या के रूप में ग्रहण किया था और बिना दान पाये हुए उसे हर ले गये, सो यह चोरी की प्रवृत्ति क्या उचित है?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:



"न-न, आप ऐसा न कहें ! यह तो निश्चय ही स्वामी का विवाह है । भरत-वंश में उत्पन्न हुए, सुप्रसिद्ध वत्सदेश के अधिपति होकर हमारे महाराज बिना स्त्री बनाये, उसे शिक्षा कैसे देंगे ?"

"आज भी महासेन ने वत्सराज का समुचित सत्कार किया, इसको क्यों नहीं देखते । नलागिरि को पकड़ने के लिए छोड़ा था तो तुम्हारे स्वामी को फिर क्यों नहीं बंदी किया !"

"निंदा के भय से ।"

"विजित शत्रु के लिए शास्त्र में क्या वचन है ?" भरतरोहक ने पूछा ।

"वध ।" यौगंधरायण ने संक्षेप में उत्तर दिया ।

"यदि वत्सराज वध के योग्य था तो हम लोगों ने उसका सत्कार क्यों किया ?"

"निश्चय ही यह समझकर कि इस प्रकार उस (प्रद्योत) का भी शरीर न रहेगा ।"

"आप ऐसा समझते हैं ?"

यह तीखा तर्क-वितर्क चल ही रहा था कि अंतःपुर के अग्रभाग से क्रंदन का स्वर सुनाई दिया। भरतरोहक ने कंचुकी से कहा, "देखो, यह कैसा कोलाहल मचा हुआ है ?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.



कंचुकी ने लौटकर बताया, "शोक से अभिभूत रानी अंगारवती राजप्रासाद से कूदकर प्राण देने को उद्यत थीं। महासेन ने उनसे कहा कि क्षत्रियोचित धर्म से ही तुम्हारी पुत्री का विवाह संपन्न हुआ है। इस हर्ष के अवसर पर तुम क्यों संताप करती हो। सो इस प्रकार वत्सराज और वासवदत्ता के चित्रपट को रखकर विवाह-कर्म पूरा कीजिये। वहां अब स्त्री-जन आज क्रमशः हर्षित और व्याकुल होकर मंगलमय कौतुक कार्य को आंसू भरकर पूरा कर रही हैं।"

यौगंधरायण ने कहा, "इस प्रकार महासेन हमारे महाराज का संबंध स्वीकार करते हैं। बड़े हर्ष की बात है!"

भरतरोहक ने पूछा, "आर्य यौगंधरायण, अब हमारे महाराज आपका क्या प्रिय कार्य करें?"

"महासेन मुझसे प्रसन्न हैं तो इससे अधिक क्या चाहिए?" यौगंधरायण ने उत्तर दिया।

और इस प्रकार एक रोमांचक नाटक का मांगलिक पटाक्षेप हुआ।

●

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

## 'मंडल' द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

| | | | |
|---|---|---|---|
| आत्मकथा (गांधीजी) | ४.०० | भूदान-यज्ञ (विनोबा) | .२५ |
| प्रार्थना-प्रवचन : २ भाग,, | ५.५० | राजघाट की संनिधि में ,, | .६२ |
| गीता-माता ,, | ४.०० | विचारपोथी ,, | १.०० |
| पंद्रह अगस्त के बाद | १.५०,२.०० | सर्वोदय का घोषणा-पत्र ,, | .२५ |
| धर्मनीति | ,,१.५०,२.०० | सर्वोदय-संदेश ,, | १.५० |
| द० अफ्रीका का सत्याग्रह | ३.५० | मेरी कहानी (नेहरू) | १०.०० |
| मेरे समकालीन ,, | ५.०० | ,, (संक्षिप्त) ,, | २.५० |
| आत्म-संयम ,, | ३.०० | हिन्दुस्तान की समस्याएं ,. | २.५० |
| गीता-बोध ,, | .५० | राष्ट्रपिता ,, | २.०० |
| अनासक्तियोग ,, | .७५ | राजनीति से दूर ,, | २.०० |
| ग्राम-सेवा ,, | .३७ | विश्व-इतिहास की झलक (संक्षिप्त) | ६.०० |
| मंगल-प्रभात ,, | .३७ | हिन्दुस्तान कीं कहानी (संपूर्ण) | १०.०० |
| सर्वोदय ,, | .३७ | हिन्दुस्तान की कहानी (संक्षिप्त) | २.५० |
| नीति-धर्म ,, | .३७ | नया भारत ,, | .३० |
| आश्रमवासियों से ,, | .४० | आजादी के दस साल ,, | .३० |
| हमारी मांग ,, | १.०० | गांधीजी की देन (राजेन्द्रप्रसाद) | १.५० |
| सत्यवीर की कथा ,, | .२५ | गांधी-मार्ग ,, | .१२ |
| आत्मकथा (संक्षिप्त) ,, | १.०० | महाभारत-कथा (राजाजी) | ५.०० |
| हिन्द-स्वराज्य ,, | .७५ | कुब्जा-सुन्दरी ,, | २.२५ |
| अनीति की राह पर ,, | १.०० | शिशु-पालन ,, | .५० |
| बापू की सीख ,, | .५० | मैं भूल नहीं सकता (काटजू) | २.५० |
| गांधी-शिक्षा : तीन भाग ,, | .९२ | कारावास-कहानी | ७.५० |
| आज का विचार : दो भाग ,, | .७४ | गांधी की कहानी | १.५० |
| ब्रह्मचर्य : दो भाग ,, | १.७५ | भारत-विभाजन की कहानी | १.५० |
| गांधीजी ने कहा था : ९ भाग | २.७० | इंगलैंड में गांधीजी | १.२५ |
| शान्ति-यात्रा (विनोबा) | १.५० | बा, बापू और भाई | ०.५० |
| विनोबा के विचार : २ भाग | ३.०० | गांधी-विचार-दोहन | १.५० |
| गीता-प्रवचन ,, | १.५० | बुद्ध-वाणी (वियोगी हरि) | १.०० |
| जीवन और शिक्षण ,, | २.०० | सन्त-सुधासार, ,, | ६.०० |
| स्थितप्रज्ञ-दर्शन ,, | १.०० | श्रद्धाकण ,, | ०.७५ |
| ईशावास्यवृत्ति ,, | .७५ | अयोध्याकाण्ड ,, | १.०० |
| ईशावास्योपनिषद् ,, | .१२ | भागवत-धर्म (हरिभाऊ उपाध्याय) | ५.५० |
| सर्वोदय-विचार ,, | १.१२ | श्रेयार्थी जमनालालजी ,, | २.०० |
| स्वराज्य-शास्त्र ,, | .५० | | |
| गांधीजी को श्रद्धांजलि ,, | .३७ | | |

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

| | | | |
|---|---|---|---|
| तामिल-वेद | १.५० | स्वतन्त्रता की ओर | ४.०० |
| बापू के आश्रम में (हरिभाऊ उपाध्याय) | १.२५ | राष्ट्रीय गीत | ४.५० |
| मानवता के झरने | १.५० | हमारे गांव की कहानी | १.५० |
| बापू (घ० दा० बिड़ला) | २.०० | खादी द्वारा ग्राम-विकास | .७५ |
| रूप और स्वरूप " | .७५ | साग-भाजी की खेती | ३.५० |
| डायरी के पन्ने " | १.०० | ग्राम-सुधार | १.२५ |
| ध्रुवोपाख्यान " | .३० | पशुओं का इलाज | .७५ |
| स्त्री और पुरुष (टाल्स्टाय) | १.०० | चारा-दाना | .२५ |
| मेरी मुक्ति की कहानी " | १.५० | रामतीर्थ-संदेश—३ भाग | १.१२ |
| प्रेम में भगवान " | २.५० | रोटी का सवाल | ३.०० |
| जीवन-साधना " | १.२५ | नवयुवकों से दो बातें | .५० |
| कलवार की करतूत " | .३५ | पुरुषार्थ | ६.०० |
| हमारे जमाने की गुलामी" | १.०० | काश्मीर पर हमला | २.०० |
| बुराई कैसे मिटे ? " | १.०० | शिष्टाचार | ०.५० |
| बालकों का विवेक " | .५० | तट के बंधन | २.५० |
| हम करें क्या ? " | ४.०० | भारतीय संस्कृति | ३.५० |
| धर्म और सदाचार " | १.२५ | आधुनिक भारत | ५.०० |
| अंधेरे में उजाला " | १.५० | फलों की खेती | ३.०० |
| ईसा की सिखावन " | १.०० | मैं तन्दुरुस्त हूं या बीमार ? | ०.५० |
| कल्पवृक्ष | २.५० | नवजागरण का इतिहास | ३.०० |
| साहित्य और जीवन | २.०० | गांधीजी की छत्र-छाया में | १.५० |
| कब्ज (म० प्र० पोद्दार) | १.०० | भागवत-कथा | ३.५० |
| हिमालय की गोद में " | २.०० | जय अमरनाथ | १.५० |
| कहावतों की कहानियां" | २.२५ | हमारी लोक-कथाएं | १.५० |
| राजनीति-प्रवेशिका | १.०० | संस्कृत-साहित्य-सौरभ (३६ पुस्तकें) प्रत्येक | .४० |
| जीवन-संदेश | १.२५ | समाज-विकास-माला (१५१ पुस्तकें) प्रत्येक | .३७ |
| अशोक के फूल | ३.०० | कृषि-ज्ञान-कोष | ४.०० |
| जीवन-प्रभात | ५.०० | प्रकाश की बातें | १.५० |
| कांग्रेस का इतिहास २ भाग | २०.०० | धरती और आकाश | १.५० |
| सप्तदशी | २.०० | ध्वनि की लहरें | १.५० |
| रीढ़ की हड्डी | १.५० | गरमी की कहानी | १.५० |
| अमिट रेखाएं | ३.५० | जानवरों का जगत | १.५० |
| एक आदर्श महिला | १.०० | | |

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding:

## 'संस्कृत साहित्य सौरभ' की पुस्तकें

| | |
|---|---|
| १. कादम्बरी | १९. शिशुपाल-वध |
| २. उत्तर रामचरित | २०. बुद्ध-चरित |
| ३. वेणी-संहार | २१. कुमारसंभव |
| ४. शकुन्तला | २२. महावीर-चरित |
| ५. मृच्छकटिक | २३. रत्नावली |
| ६. मुद्राराक्षस | २४. पंचरात्र |
| ७. नलोदय | २५. प्रियदर्शिका |
| ८. रघुवंश | २६. वासवदत्ता |
| ९. नागानन्द | २७. रावण-वध |
| १०. मालविकाग्निमित्र | २८. सौंदरनंद |
| ११. स्वप्नवासवदत्ता | २९. कुंदमाला |
| १२. हर्ष-चरित | ३०. यशस्तिलक |
| १३. किरातार्जुनीय | ३१. तिलक-मंजरी |
| १४. दशकुमार-चरित : १ | ३२. प्रतिमा-नाटक |
| १५. दशकुमार-चरित : २ | ३३. तीन नाटक |
| १६. मेघदूत | ३४. नैषध-चरित |
| १७. विक्रमोर्वशी | ३५. चम्पू भारत |
| १८. मालतीमाधव | ३६. प्रतिज्ञा यौगन्धरायण |

मूल्य प्रत्येक का ४० नये पैसे



भारती साहित्य मन्दिर

चालीस नये पैसे

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus, Kathmandu